

**अन्यापेक्षी** वि. (तत्.) [अन्य+अपेक्षी] जो किसी कार्य में दूसरे के आश्रय/सहारा लेने की अपेक्षा करता हो पर्या. परापेक्षी, परावलंबी।

**अन्याय** पुं. (तत्.) 1. न्याय का अभाव, अनीति, नाइंसाफी, न्याय न होना 2. अत्याचार, अनाचार।

**अन्यायी** वि. (तत्.) अन्याय करने वाला, अनुचित कार्य करने वाला; दुराचारी।

**अन्यार्थ** वि. (तत्.) [अन्य+अर्थ] 1. जिससे अन्य अर्थ की प्रतीति हो 2. जिसका अन्य अर्थ भी हो पुं. प्रसिद्ध अर्थ से भिन्न अर्थ।

**अन्याश्रित** वि. (तत्.) दूसरे पर आश्रित, पराश्रित।

**अन्यून** वि. (तत्.) जो न्यून न हो, जो कम न हो; पर्याप्त, बहुत।

**अन्यूनंग** वि. (तत्.) [अन्यून+अंग] जो न्यून अंग वाला न हो, जिसके संपूर्ण अंग हो, पूर्णांग।

**अन्योक्ति** स्त्री. (तत्.) ऐसा कथन जो साधर्म्य के आधार पर प्रस्तुत की अपेक्षा किसी अप्रस्तुत (अन्य) पर लागू होता है।

**अन्योन्य** वि. (तत्.) परस्पर, आपस में, एक-दूसरे पर पुं. (तत्.) वह अलंकार जिसमें दो वस्तुओं की किसी क्रिया के गुण का एक-दूसरे के कारण उत्पन्न होना बताया जाता है।

**अन्योन्य प्रभाविता** स्त्री. (तत्.) 1. परस्पर एक दूसरे को अपने सदाचरण आदि गुणों से प्रभावित करने की स्थिति 2. परस्पर एक-दूसरे को प्रभावित करने वाला गुण।

**अन्योन्यता** स्त्री. (तत्.) [अन्योन्य+ता प्रत्यय] 1. परस्पर होने का भाव 2. आपसी संबंध का व्यवहार 3. एक-दूसरे के प्रति कुछ करने का भाव।

**अन्योन्य संदर्भ** पुं. (तत्.) कोश. विषयगत/ अर्थात् एक सदृश सूचना देने वाली प्रविष्टियों का पारस्परिक संदर्भ अर्थात् एक प्रविष्टि में दिये गए विषय को दूसरी प्रविष्टि में उसे देखने का संकेत होना।

**अन्योन्याभाव** पुं. (तत्.) दर्श. न्यायदर्शन में अभाव के तीन भेदों में से एक जिसके अनुसार किसी एक पदार्थ का अन्य पदार्थ न होकर उससे बिल्कुल भिन्न होना, जैसे- 'घट' और पट, इन दोनों में अन्योन्याभाव है।

**अन्योन्याश्रय** पुं. (तत्.) एक-दूसरे का सहारा, एक-दूसरे का अपेक्षी, सापेक्ष।

**अन्योन्याश्रित** वि. (तत्.) एक-दूसरे पर आश्रित।

**अन्वक्ष** वि. (तत्.) [अनु+अक्ष] 1. आँखों के सामने 2. प्रत्यक्ष, दृश्य 3. अनुभगगम्य क्रि.वि. सामने, पीछे।

**अन्वय** पुं. (तत्.) 1. दो वस्तुओं की अनुरूपता; तारतम्य 2. किसी पद के शब्दों को व्याकरण की वाक्य-संरचना के अनुसार यथाक्रम लगाना 3. कार्य-कारण का पारस्परिक संबंध 4. एक बात को सिद्ध करने के लिए उससे जुड़ी दूसरी बात सिद्ध कर उन्हें जोड़ना।

**अन्वयदोष** पुं. (तत्.) [अन्वय+दोष] साहि. एक प्रकार का वाक्य दोष, पदों का अन्वय ठीक से न होना। वाक्य या कविता में पदों का इस प्रकार का विन्यास हो कि जिससे उनका परस्पर अन्वय करते समय स्पष्टता का अभाव हो, जैसे- मंगल भवन अमंगलहारी। द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी"। यहाँ पर 'द्रवहु' क्रिया का अन्वय 'दशरथ' के साथ हो या अजिर बिहारी के साथ हो या 'दशरथ अजिर बिहारी' इसे एकपद मानकर हो यह पूर्णतया स्पष्ट नहीं है।

**अन्वयव्यतिरेक** पुं. (तत्.) 1. अनुरूपता तथा भिन्नता या विपरीतता 2. नियम तथा अपवाद।

**अन्वयव्याप्ति** स्त्री. (तत्.) स्वीकार्य तर्क के लागू (व्याप्त) होने की स्थिति, जैसे- धुआं होगा तो आग तो होगी।

**अन्वयागत** वि. (तत्.) [अन्वय+आगत] जो रीति-रिवाज आदि वंश परंपरा से चला आया हो और अभी भी मान्य हो, कुलपरंपरागत, वंश परंपरा प्राप्त, आनुवंशिक उद्भा. अन्वयागतनियम, रीति-रिवाज।